ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

भारत की सयुंक्त राष्ट्र संघ में भूमिका

India's Role in the United Nations

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

सुनीता गोयल
सह. आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राज. डूंगर कॉलेज,
राजस्थान, भारत

सारांश

संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा, एवं विकास के लिए कटिबद्व 193 संयुक्त राष्ट्रों का संगठन है, जिनकी स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भविष्य में युद्धों की विभत्स्ता को रोकने के लिए की गई थी।

भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के संस्थापक सदस्यों में एक रहा है। भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत के अनुरूप ही शांति सद्भावना में स्थापित करने में संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति मिशनों में अपना अमूल्य योगदान दिया है। वर्तमान में 2021–22 के लिए भारत संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में अस्थायी सदस्य के रूप में 184 वोट पाकर विजित रहा जो भारत के संयुक्त राष्ट्र में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका दर्शाता है। 1950 में भारत अस्थायी सदस्य पहली बार बना तथा वर्तमान में 8 वीं बार सदस्य बना है। शांति मिशन के आलावा भारत U.N.O. के विभिन्न निकायों का सदस्य रहा है। विकास गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन, आंतकवाद, जलदस्युता, निःसस्त्रीकरण, मानवाधिकार, बहुपक्षीय वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में भारत ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। 2020 में U.N.O. के 75 वें वर्ष के संदर्भ में पी.एम. मोदी ने कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए U.N.O की भूमिका पर सवाल उठाये एवं वैश्विक स्तर पर कदम उठाने को कहा। सारांश में U.N.O. में भारत सक्रिय भूमिका निभाता रहा है।

The United Nations Organization for International Peace, Security, and Development is a 193 United Nations organization, which was established after World War II to prevent the collapse of future wars. India has been one of the founding members of the United Nations. India has contributed its invaluable contribution in peace missions of the United Nations in establishing peace in harmony with its cultural heritage. Currently, India won by securing 184 votes as a provisional member of the Security Council of the United Nations for 2021-22, indicating India's significant role in the United Nations. India became a temporary member for the first time in 1950 and currently became a member for the 8th time. Apart from the peace mission, India has been a member of various bodies of peace. India has made invaluable contribution in the development of poverty alleviation, climate change, terrorism, piracy, disarmament, human rights, multilateral global challenges. In the context of the 75th year of 2020, P.M. Modi questioned the role of Naxal for the prevention of Corona epidemic and asked to take steps globally. In summary, India has been playing an active role in mining.

मुख्य शब्द : संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.), शांति और सुरक्षा, स्वतंत्र राष्ट्र, उद्देश्य, सिद्धान्त, अन्तर्राष्ट्रीय, सुरक्षा परिषद ।

United Nations Organization (Peace), Peace and Security, Independent Nation, Objectives, Principles, International, Security Council.

प्रस्तावना

संयुक्त राष्ट्र संगठन दुनिया के लगभग 193 सदस्य देशों का एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को सैन–फ्रांसिस्को कैलिफोर्निया में हुई थी, जो विश्व युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद थी। यह एक विश्व निकाय है। जिसमें बड़ी संख्या में संम्प्रभू राज्य है। युद्धों के दौरान त्रासदी, रक्तपात, नरसंहार, भूख और परमाणु अत्याचार, भविष्य में युद्धों की सम्भावना से दुनिया को मुक्त करने के लिए U.N.O. ने राष्ट्रो को सतर्क चेतावनी दी है

U.N.O. के छः प्रमुख अंग है। जो अलग अलग उद्देश्यों के साथ अपनी भूमिका निभाते है।

1. महासभा– सभी सदस्य राज्यों के प्रतिनिधियों से बना है।
2. सुरक्षा परिषद – अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए 5 स्थायी 10 अस्थायी सदस्यों का संगठन
3. आर्थिक और सामाजिक परिषद
4. न्यास परिषद (वर्तमान समय में निष्क्रिय है 1994 में आखिरी राज्य को स्वतंत्रता प्राप्त हो गई)
5. अर्न्तराष्ट्रीय न्यायालय
6. सचिवालय

जवाहर लाल नेहरू ''(1946) भारत संयुक्त राष्ट्र संघ की चार्टर की भावना के और उसके राष्ट्रों के प्रति पूर्ण सहयोग करने तथा निःसंदेह पालन करने हेतु प्रतिबद्ध है। यह परम्परा आज भी जारी है। 24 अक्टूबर 2020 को संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण हो गए है। इस दौरान भारत संयुक्त राष्ट्र का महत्वपूर्ण सहयोगी सिद्ध हुआ है। द्वितीय विश्व युद्ध जैसी वीभत्स्ता को भविष्य में रोकने के उद्देश्य से 24 अक्टूबर 1945 को U.N.O. का गठन किया गया संयुक्त राष्ट्र अधिकार पत्र पर 50 देशों के हस्ताक्षर के साथ इसकी स्थापना हुई। जिसमें भारत भी शामिल था।

संयुक्त राष्ट्र के जन्म से ही भारत का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। जिस समय सैन–फ्रांसिसको सम्मेलन मे अटलांटिक चार्टर के आधार पर इस अर्न्तराष्ट्रीय संस्था की रूपरेखा तैयार की जा रही थी। उस दौरान दो दो भारतीय राजनायिक प्रतिनिधिमण्डल परामर्श में भाग ले रहे थे। ये थे गिरिजा शंकर वाजपेयी और श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित। आरम्भ से संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय नेताओं–नीति निर्धारको ने अपनी निष्ठा की घोषणा की ।

संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न अंगो तथा एजेसिंयों में भारत की भूमिका

सुरक्षा परिषद एवं भारत

U.N.O. के कार्यकारी निकाय के रूप में सुरक्षा परिषद का मूल कार्य वैश्विक शांति की स्थापना है। वर्तमान में इसके 5 स्थायी तथा 10 अस्थायी सदस्य है। भारत वर्तमान में अस्थायी सदस्यता के साथ 8 वीं बार सदस्य बना है। भारत ने सुरक्षा परिषद में सदैव बहुपक्षवाद, अर्न्तराष्ट्रीय विधि तथा शांति का सदैव पक्ष लिया है।

भारत द्वारा सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों को प्राप्त निषेधाधिकार शक्ति को विकेन्द्रीकृत करने के भी प्रयास किये गए है। विश्व के विभिन्न देशों द्वारा सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की मांग की गई है। क्यों कि भारत ने विश्व में शांति स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कोरिया संकट, कांगो समस्या, स्वेज नहर संकट और क्यूबा संकट को हल करने में सराहनीय भूमिका का निर्वाह किया है।

महासभा में भारत

यह U.N.O. का लोकतांत्रिक अंग है। इसके 13 वें अधिवेशन में भारत को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था।

भारत ने महासभा में शांति, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व आंतकवाद से मुक्ति के पक्ष में प्रस्तावों का समर्थन किया है।

1953 में विजय लक्ष्मी पंडित महासभा की प्रथम महिला सभापति रह चुकी है। उन्होंने 8 वें अधिवेशन की अध्यक्षता की।

U.N.O. की अर्थिक सामाजिक परिषद में भारत

भारत आर्थिक एवं सामाजिक परिषद का प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था परिषद द्वारा विश्व कल्याण के लिए कई एजेन्सिया यथा यूनिसेफ, यूएनडी पी कार्य कर रही है। हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने आर्थिक सामाजिक परिषद की उच्चस्तरीय आभासी बैठक में कोरोनोतर काल में बहुपक्षीय संस्थाओं के सुधार पर बल दिया है। इनमें भारत की महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका है।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में भारत

भारत ने सदैव अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के निर्णयों का पालन किया है। बंग्लादेश से समुद्री सीमा विवाद हो या कुलभूषण जाघव का मामला भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का सम्मान किया है।

भारत के न्यायाधीश दलबीर भंडारी ने ब्रिटिश न्यायाधीश ग्रीनवुड को हराकर भारत की U.N.O. में महत्वपूर्ण भूमिका को सुनिश्चित किया है। इससे पहले वी. एन.राव, नागेन्द्र सिंह, आर.एस. पाठक भी अर्न्तराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश रह चुके है। नागेन्द्र सिंह मुख्य न्यायाधीश रह चुके है।

गर्वनर जनरल की कार्यकारी परिषद के आपूर्ति सदस्य और भारत के प्रतिनिधि मंडल के नेता सर ए रामास्वामी ने 26 जून 1945 को संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर किए है।

भारत संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने विद्धानों, सैनिको एवं कर्मचारियों के माध्यम से जो सक्रिय योगदान दे रहा है उसकी तारीफ U.N.O. के भूतपूर्व महासचिव कोफी अन्नान ने भी की है। संयुक्त राष्ट्र के एजेंडा को आकार देने में सहायता प्रदान करने में भारत की महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका रही है। भारत के सशस्त्रो बलों का अनुभव एवं क्रियाशीलता संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति अभियानों में प्रमुख भूमिका निभाता रहा है। भारत संयुक्त राष्ट्र को शांति और सुरक्षा की स्थापना के प्रमुख गारंटर के रूप में देखता है। भारत ने युद्ध की विभिषीका एवं विश्व शांति की स्थापना के लिए ही 1942 को संयुक्त राष्ट्र के घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए थे तथा सेनफ्रासिस्को सम्मेलन में भाग लिया था। जवाहर लाल नेहरू ने कहा भी था कि U.N.O. के बिना दुनिया जीवित नहीं रह सकती।

स्वतंत्र भारत ने संयुक्त राष्ट्र में अपनी सदस्यता को अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने की एक महत्वपूर्ण गारंटी के रूप में देखा। भारत संयुक्त राष्ट्र के उपनिवेशवाद और रंगभेद के विरूद्ध संघर्ष के अशान्त दौर में सबसे आगे रहा। भारत औपनिवेशिक देशों और कौमों को आजादी दिए जाने के संबंध में संयुक्त राष्ट की ऐतिहासिक घोषणा 1960 का सह–प्रयोजक था जो उपनिवेशवाद के सभी रूपो और अभिव्यक्तियों को बिना शर्त समाप्त किए जाने की आवश्यकता की घोषणा करती है। भारत राजनीतिक स्वतंत्रता समिति (24 की समिति) का पहला अध्यक्ष की निर्वाचित हुआ। जहां उपनिवेशवाद की समाप्ति के लिए उसके अनवरत् प्रयास रिकार्ड पर है।

भारत दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद और नस्लीय भेदभाव के सर्वाधिक मुखर आलोचको में से था वस्तुतः भारत सुयुक्त राष्ट्र संघ (1946) में इस मुद्दे को उठाने वाला पहला देश था और रंगभेद के विरूद्ध आम सभा द्वारा स्थापित उप समिति के गठन में अग्रणी भूमिका निभाई थी। जब 1965 में सभी प्रकार के नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन से सम्बंधित कन्वेंशन पारित किया गया था, भारत सबसे पहले हस्ताक्षर करने वालों में शामिल था।

भारत संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों का समर्थक है। संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों एवं उसके लक्ष्यों को कार्यान्वित करने में भारत ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कोफी अन्नान ''पिछले दशको में भारतीय सैनिको, विद्धानों सिविल कर्मचारियों के माध्यम से भारत ने संयुक्त राष्ट्र में प्रचुर योगदान किया है। ''भारत संयुक्त राष्ट्र को ऐसे मंच के रूप में देखता है। जो अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के गारंटर के रूप में भूमिका निभा सकता है। वर्तमान में भारत ने विकास एवं गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन, निःशक्तिकरण, आंतकवाद, मानवाधिकार शांति निर्माण एवं शांति स्थापना की बहुपक्षीय वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए संयुक्त राष्ट्र प्रणाली को सदृढ़ करने का प्रयास किया है। भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन तथा विकासशील देशों का समूह 77 का गठन किया जिन्होंने साम्यपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अपना सहयोग दिया।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनु. 53 मे उच्चजीवन स्तर, पूर्ण रोजगार, आर्थिक सामाजिक प्रगति का उल्लेख है। भारत ने अमुख उद्वेश्यों को प्राप्त करने के लिए समय समय पर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक जैसे अन्तर्राराष्ट्रीय वित्तिय संस्थाओं में सुधार के लिए आह्वान किया है। भारत ने सभी प्रकार के आंतकवाद के प्रति शून्य सहायता के दृष्टिकोण की वकालत की है 1996 भारत ने आंतकवाद पर एक प्रारूप व्यापक अभिसमय (सी.सीआई.टी) प्रस्तुत किया जिसका उद्देश्य आंतकवाद से लड़ने के लिए एक अधोपांत कानूनी रूपरेखा प्रदान करता है। संयुक्त राष्ट्र की जनसंख्या निधि जैसी निधियों में योगदान करने वाले देशों में भारत प्रमुख देशों में से एक है। इस निधि की स्थापना वर्ष 2005 में हुई थी। लोकतांत्रिक मूल्यों एवं प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने के लिए भारत इस निधि में दूसरा सबसे बड़ा देश है। भारत सात बार सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य रह चुका है। 2011–12 में सातवीं बार अस्थायी सदस्य बना था। इससे पहले 1950, 1965, 1972, 1977, 1984, 1991 में भी अस्थायी सदस्य बन चुका है। 2021–22 के लिए 8वीं सदस्य निर्वाचित हुआ है।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र के सुधारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने उपनिवेशवाद और रंगभेद के अंत जैसे कई सुधारों में भाग लिया। जब अन्तर्राष्ट्रीय शांति बनाने के लिए कदम उठाने की बात है जो भारत सदैव U.N.O. में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

नरेन्द्र मोदी ''संयुक्त राष्ट्र में भारत का सबसे महत्वपूर्ण योगदान शांति संचालन कार्यों में इसकी भूमिका है।'' भारतीय महिला सैनिको ने शांति बनाए रखने वाले मिशनों में योगदान दिया है। भारत पहला देश है जिसने महिलाओ को शांति मिशन के लिए भेजा है।

वर्तमान में 7000 सैनिक भारतीय सैनिको को संयुक्त राष्ट्र शांति पालन की पहल के साथ तैनात किया गया है। यह दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा है। संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन में 1,60,000 से अधिक सैनिको ने योगदान दिया है। भारत का दावा है कि 2017 तक 71 संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में 50 अभियानों में भारत ने अपनी सेवाएं दी है। विश्व शांति में भारत की भूमिका का गौरवशाली इतिहास रहा है 1950 से ही भारत शांति अभियानों में शामिल हो रहा है कुछ अभियान निम्न हैः–

1. विश्व में विविध शक्ति गुटो का निर्माण विश्वशांति के लिए सबसे बड़ा खतरा है यही कारण है कि भारत किसी भी गुट में सम्मिलित नहीं हुआ।
2. कोरिया और कांगों में संयुक्त राष्ट्र की ओर भारतीय सेना ने शांति स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
3. विश्व शांति की स्थापना के उद्देश्य से भारत ने कश्मीर की समस्या को संयुक्त राष्ट्र में भेज दिया।
4. नव. 1988 में मालद्वीप में सैनिक भेजकर सहायता की जिसकी सराहना पूरे विश्व ने की।
5. श्री लंका में शांति सेना भेजकर मानवता का परिचय दिया।
6. भारत ने उपनिवेशों और उनकी जनता को स्वतंत्र करने की मांग करते हुए अन्य सदस्य राष्ट्रो के साथ मिलकर एक प्रस्ताव रखा जिसे 1950 में ही संयुक्त राष्ट्र ने स्वीकार किया।
7. भारत ने इण्डोनेशिया, मालाया, लीबिया, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, साइप्रस की स्वतंत्रता का प्रबल समर्थन किया है।
8. भारत परमाणु हथियारों के कुल उन्मूलन की मांग करने वाला एकमात्र परमाणु हथियार सम्पन्न राज्य है। 1996 में भारत ने 20 अन्य देशों के साथ परमाणु हथियार के उन्मूलन की एक योजना प्रस्तुत की है। (CCIT)
9. भारत ने संयुक्त राष्ट्र के विकसित देशों के लिए ODA के अनुमानों का पता लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 74 वें सत्र संबोधित करते हुए कहा है संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में सबसे अधिक बलिदान जिस देश ने दिया है वह भारत है। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द का जिक्र करते हुए कहा सवा सौ साल पहले स्वामी विवेकानन्द ने विश्व धर्म संसद से दुनिया को एक संदेश दिया सद्भाव और शांति का। भारत की ओर से आज भी दुनिया को यही संदेश है।

भारतीय सशस्त्र बलों की पहली तैनाती सन् 1950 में कोरियाई युद्ध के दौरान हुई थी अन्य अभियान जिसमें भारतीय सैनिको ने भाग लिया उनमें भारत–चीन (वियतनाम, लाओस, कंबोडिया) कॉगो, मोजाम्बिक, सोमालिया, खांडा, अंगोला, सिएरा–लियोन और इथोपिया शामिल है। वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बल संयुक्त राष्ट्र के 14 शांति अभियानों में सूडान (UNMISS) गोलन

हाइट्स (UNDOF) आइवरी कोस्ट (MINUSTAH) और लाइबेरिया (UNMIL) में है।

U.N.O. के जलवायु परिवर्तन की लड़ाई में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रंशसा सयुंक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भी की है। संयुक्त राष्ट्र ने अपने 17 सतत् विकास लक्ष्यों की जो ऐतिहासिक योजना शुरू की है जो अधिक सम्पन्न, अधिक समतावादी अधिक संरक्षित विश्व की ओर अग्रसर होना है। उसमें भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ''एजेंडा 2030 के पीछे हमारी सोच जितनी ऊंची है हमारे लक्ष्य भी उतने ही समग्र है। मानवता के 1/6 हिस्से के सतत विकास का विश्व और हमारे सुन्दर पृथ्वी के लिए बहुत गहरा असर होगा। भारत सरकार सतत विकास लक्ष्य सहित 2030 के एजेंडा के प्रति दृढता से समर्पित है।

संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न अंगों में अपना स्थान बनाकर भारत ने सक्रिय भूमिका निभायी है भारत की विजयलक्ष्मी पंडित 1953 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनने वाली विश्व की पहली महिला थी जहां उन्होंने रंगभेद के खिलाफ और विश्व शांति पक्ष में बात की। भारत 1950–51, 1965–66, 1972–73, 1977–78, 1984–85, 1991–92, 2011–12 वर्षों में सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य निर्वाचित हो चुका है। संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक सामाजिक परिषद में 2015–17 के लिए भारत को 10 वीं बार सदस्य चुना गया। भारत संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आयोग, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की अधिशासी परिषद, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग तथा संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकर आयोग तथा संयुक्त राष्ट्र नारकोटिक औषध द्रव्य की संस्थाओं में निर्वाचित होकर अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका का अहसास हमें तभी होता है जब संयुक्त राष्ट्र संघ में विभिन्न पदों पर होने वाले चुनावों में भारतीय उम्मीदवारों को भारी समर्थन मिलता है। इस संदर्भ में सन् 2017 भारत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहा जब उसके कई भारतीय उम्मीदवारों ने संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न निकायों में महत्वूर्ण पदों को जीतकर भारत के लिए यश अर्जित किया। सामाजिक और आर्थिक मुद्दो पर केन्द्रित दो सहायक निकायों के चुनाव में भारत 50 सदस्यो में से 49 सदस्यों ने भारत के पक्ष में मतदान किया जनवरी 2018 में चार साल की अवधि के लिए अर्न्तर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य नियंत्रण बोर्ड में भारत को 19 राष्ट्रों के साथ चुना गया 2018 जून में भारत तीन वर्षों के लिए आर्थिक सामाजिक पर्यावरणीय मुद्दो पर संयुक्त राष्ट्र के मुख्य अंग में पुनः निर्वाचित हुआ। भारत को 183 वोट प्राप्त हुए। पाकिस्तान को मात्र एक वोट मिला।

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय कानून विशेषज्ञ नीरू चड्ढा ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण के लिए सागर कानून के लिए एक महत्वपूर्ण चुनाव जीता था। इस तरह ट्रिब्यून के न्यायाधीश के रूप में चुने जाने वाली पहली भारतीय महिला बनी। नवम्बर 18 में न्यायाधीश दलवीर भंडारी का पुनर्निर्वाचन भारत की एक बहुत बड़ी कूटनीतिक जीत रही कूटनीतिज्ञ जीत इसलिए कि भारतीय उम्मीदवार के सामने यूके का उम्मीदवार था। सुरक्षा परीषद् के स्थायी सदस्य को साधारण सदस्य से हार मिली यह आसान नहीं था। इसकी प्रक्रिया बहुत जटिल थी विजय में भारत की प्रतिष्ठित विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की प्रभावपूर्ण भूमिका रही।

न्यास परिषद में भी भारत ने उपनिवेशवादी विरोधी रूख अपनाकर पराधीन देशो की स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया सन् 1958 में पश्चिमी अफ्रीका के निरीक्षक मण्डल का महत्वपूर्ण सदस्य था।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, खाद्य एवं कृषि संगठन तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन में भी भारत ने समय समय पर अपनी महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका निभायी है। संयुक्त राष्ट्र बाल आपात कोष का प्रादेशिक कार्यालय भी भारत में है।

मार्च 1968 में नई दिल्ली में अंकटाड सम्मेलन आयोजित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक का भारत संस्थापक सदस्य है। स्थापना के समय इसकी पूंजी में भारत का 5 वां सबसे बड़ा भाग था। भारत को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 49 वें सत्र के उपाध्यक्ष के रूप में और स्थायी विकास आयोग के उपाध्यक्ष के रूप में भी निर्वाचित किया गया है।

दक्षिण अफ्रिका में रंगभेद और नस्लीय भेदभाव के खिलाफ लड़ाई में भारत सबसे आगे था। संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधियों ने रंगभेद नीति के विरूद्ध विश्व जनमत का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारत रंगभेद के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र विशेष समिति का संरक्षक है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा भारी बहुमत से पारित रंगभेद सम्बंधी संकल्पों की रूपरेखा बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र के निःशस्त्रीकरण के उद्देश्य में भी अपना सक्रिय योगदान दिया है। भारत के डॉ. जे.एच. भाभा परमाणु शक्ति के शांतिपूर्ण उपयोग पर आयोजित प्रथम संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया। 1996 में भारत ने परमाणु हथियारों के चरणबद्ध उन्मूलन (1996–2020) के लिए कॉल ऑफ एक्शन ऑफ ए'' कार्यक्रम का आह्वान करते हुए 21 देशो के एक समूह के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया। भारत परमाणु हथियारो वाला एक मात्र राष्ट्र जिससे कुल परमाणु निरस्त्रीकरण के आह्वान का लगातार समर्थन किया है।

संयुक्त राष्ट्र के धन में भी भारत का योगदान है। जिसे पी.एम. मनमोहन सिंह, अमरीकी राष्ट्रपति जार्जबुश और संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने 2005 में स्थापित किया भारत आज लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाने के लिए कोष में दूसरा सबसे बड़ा योगदान कर्त्ता है।

भारत सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की मांग कर रहा है। और इसकी मांग को सही ठहराने के लिए कई दावे है। भारत में दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी है। और यह दुनिया का सबसे बड़ा उदार लोकतंत्र है। यह दुनिया की सातवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है। दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी सशस्त्र सेना है। संयुक्त

राष्ट्र के नियमित बजट में भारत मुख्य योगदानकर्त्ताओ में से एक है। संयुक्त राज्य अमीरात, कजाकिस्तान, चिली, बग्लांदेश, ऑस्ट्रेलिया, चैक गणराज्य, तंजानिया और अफ्रीकी संघ जैसे कई देश और संगठन भारत की उम्मीदवारी का खुलकर समर्थन करते है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। संयुक्त राष्ट्र में भारत सराहनीय मानवीय कार्य कर रहा है। यह वैश्विक समस्याओं को हल करने में एक सक्षम भागीदार है। संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन में भारत का नियमित योगदान है। भारत को संयुक्त राष्ट्र के सहभागी.के रूप में एक उचित स्थान होना चाहिए। बराक ओबामा ''मैं संयुक्त रूप से सुरक्षा परिषद में सुधार के लिए तत्पर हूं जिसमें भारत एक स्थायी सदस्य के रूप में शामिल है'' संयुक्त राष्ट्र और दुनिया को अपना सबसे अच्छा अर्थशास्त्री, डॉक्टर, इंजीनियर, अपना सबसे आशाजनक विचार दिया है। भारत ने दूतों और संयुक्त राष्ट्र के स्टाफ सदस्यों के रूप में गौरव हासिल किया है। भारत शांति सुरक्षा के लिए अपरिहार्य साझेदार है। भारतीय शांति सैनिकों को दुनिया भर में तैनात किया गया है।'' विश्व में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए भारत को संयुक्त राष्ट्र का स्थायी सदस्य बनाना चाहिए।

भारत ने आरम्भ से ही संयुक्त राष्ट्र संघ के हरेक शांति प्रयासों में उसका भरसक समर्थन किया है। भारत की सूझबूझ एवं रचनात्मक भूमिका के कारण जहां एक ओर अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय तीसरे महायुद्ध की विभीषिका से बचा है। वहीं दूसरी ओर तीसरी दुनिया के गरीब राष्ट्र अनेक नई चुनौतियों का मुकाबला करने में अधिक समर्थ हुए है। नई विश्व व्यवस्था, परमाणु निशस्त्रीकरण, उत्तर–दक्षिण संवाद, विश्व शांति व सुरक्षा आदि सभी मसलों पर भारत संयुक्त राष्ट्र संघ रूपी विश्व पंचायत के जरिये अपना दृष्टिकोण जोरदार ढंग से प्रस्तुत करता रहा है। जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आये है। सरांश रूप में भारत UNO में अपनी महत्वपूर्ण, सक्रिय, रचनात्मक भूमिका निभा रहा है।

वर्ष 2020 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे किए लेकिन कोविड महामारी के कारण कोई विशेष आयोजन नहीं किया गया। यहां तक सितम्बर में होने वाली महासभा की वार्षिक बैठक का आयोजन भी वर्चुअल रूप में किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने सरल शब्दों में यू एन पर सवाल उठाया उन्होंने कहा कि आखिर कब तक भारत को यू एन द्वारा भेदभाव का शिकार होना पड़ेगा। भारत को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद का सदस्य न बनाया जाना इस शांतिपूर्ण देश के साथ सरासर अन्याय है। पी.एम. मोदी ने सीधे शब्दों में पूछा आखिर कब तक यू एन में सुधार नहीं होगा उन्होनें कहा कि वैश्विक जरूरतों के हिसाब से यह संस्था बनी थी इसे वर्तमान वैश्विक जरूरतों का भी ध्यान रखना चाहिए।

भारत, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यू एन एस सी) का 8 वीं बार अस्थाई सदस्य चुना गया है। 192 वोटो में से भारत के पक्ष में 184 वोट पड़े। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टी एस त्रिमूर्ति ने अपने टविटर हैंडल से इस बात की जानकारी देते हुए लिखा कि सदस्य देशों ने भारत को भारी समर्थन देते हुए 2021–22 तक के लिए यू एन एस सी का अस्थाई सदस्य चुना है।

उद्देश्य

1. संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के बढ़ते महत्व को रेखांकित करना।
2. यूएनओ में भारत के महत्व को बताना।
3. यूएनओ एवम् भारत के संबंध की वर्तमान में प्रासंगिकता बताना

निष्कर्ष

1. U.N.O. मानवधिकार मुद्वों का भारत ने सदैव समर्थन किया। 1948 की संयुक्त राष्ट्र संघ की मानवधिकारों की सार्वभौम घोषणा का भारत ने समर्थन किया और उसे लागू करने की दिशा में भी अथक प्रयास किए है।
2. भारत ने संयुक्त राष्ट्र के उपनिवेशवाद विरोधी सिद्धान्तों को समर्थन दिया है। एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के देशों को स्वतंत्रता दिलाने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
3. भारत U.N.O. में आंतकवाद के विरूद्ध मुद्धा उठा रहा है भारत ने U.N.O. द्वारा पारित प्रस्ताव 1373 का पूर्ण समर्थन किया है। आंतकवाद के प्रति जीरो टॉलरेन्स के दृष्टिकोण का समर्थन किया है।
4. शीतयुद्धोतर काल में भारत U.N.O. के शांति अभियानों में शामिल रहा है। जिनमें सोमालिया, रवांडा, हैती, मोजाम्बिल उल्लेखनीय है। भारत शांति अभियानों में 180000 सैनिक भेज चुका है। 800 अधिकारियो के प्रशिक्षित भी किया है।
5. भारत U.N.O. द्वारा संचालित सतत विकास लक्ष्य, यूएनडी पी, पर्यावरण सुरक्षा कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है।
6. U.N.O. से संम्बद्ध विशिष्ट ऐजेन्सी अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन में भारत को 2020–21 के लिए संचालक मंडल में अध्यक्षता प्राप्त हुई है।
7. वर्तमान में चल रहे संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में 14 मिशनों में से 7 मिशन में भारतीय सशस्त्र बलों की मौजूदगी है।
8. भारत ने 1965 में अपनाए गए सभी प्रकार के नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन को लेकर अभिसमय पर सबसे पहले हस्ताक्षर करने वाले देशों में से एक था।
9. भारत के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन यूनेस्को के सर्वोच्च पद पर रह चुके है।
10. भारत ने उपनिवेशी देशों एवं लोगों को आजादी प्रदान करने पर 1960 की महत्वपूर्ण घोषणा को सह प्रायोजित किया। इस घोषणा के कार्यन्वयन की देखरेख करने के लिए गठित विशेष समिति की सी. एस.झाा ने अध्यक्षता की। महासभा द्वारा 17 सदस्य गठित समिति का अध्यक्ष बनाया गया।
11. भारत ने नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन एवं रंगभेद जैसे मुद्वो के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
12. भारत परमाणु हथियारो से लैस एक मात्र देश है। जिसमें परमाणु हथियारों के पूर्ण उन्मूलन की मांग की

है। 1996 में 20 अन्य देशों के साथ भारत ने परमाणु हथियारों के चरणबद्ध उन्मूलन के लिए कार्ययोजना भी प्रस्तुत की है।

13. भारत ने ब्राजील जापान और जर्मनी के साथ मिलकर 2005 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधारों की मांग करने के लिए जी–4 का गठन किया है।

डेग हैमर सोल्ड ''सयुक्त राष्ट्र संघ का गठन मानवता को स्वर्ग पहुंचाने के लिए नहीं बल्कि उसे नरक से बचाने के लिए हुआ हो''

संक्षेप में विश्व शांति की स्थापना, उदार और समावेशी वैश्विक दृष्टिकोण के निर्माण, मानवाधिकारो की रक्षा, विश्व के अस्तित्व की रक्षा एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों के संरक्षण में भारत U.N.O. अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है एवं निभाता रहेगा।

सारांश रूप में भारत U.N.O. में अपनी महत्वपूर्ण सक्रिय रचनात्मक भूमिका निभा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जौहरी J.C राजनीति विज्ञान S.B.P.D पब्लिकेशन 2020*
2. *लक्ष्मीकांत भारत की राजव्यवस्था टाटा M.C. graw hill education 2012*
3. *कोडेशिया कृष्णा भारत एवं सयुक्त राष्ट्र मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 1972*
4. *वैदिक वेद प्रताप महाशक्ति भारत राजकमल प्रकाशन 2005*
5. *सुधीर वेददान भारत की विदेश नीति बदलते संदर्भ में N.P.H. Publication 1978*
6. *शर्मा A.S. दिव्य पुरूष नेहरू भगवती शर्मा प्रकाशक 1964*
7. *राय M.P. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन कॉलेज बुक डिपो प्रकाशन 2012*
8. *कुमार अशोक UGC Net राजनीति विज्ञान उपकार प्रकाशन 2015*
9. *सिंधल S.C. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध लक्ष्मीनारायण प्रकाशन 2017*
10. *प्रतियोगिता दर्पण समसमायिक घटनाचक्र 2014*
11. *प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2018*